Str. 1061, 77. Calc. Ausg. नागं र्क्तं। — Die Scholien: प्रृङ्गार्-मिष। — 79. Calc. Ausg. इंसपादं, B. इंसपादः। — Die Scholien: व्हिङ्गुरुपि।

Str. 1062, 80. Calc. Ausg. मर्थम, die Scholien wie wir.

Str. 1063, 83. Calc. Ausg. गोपरसञ्च सः, die Scholien wie wir, mit der Bemerkung: गोपो रसो प्रि भीमवत् (भीम = भीमसेन) — 84. Dieselben: रत्नमष्टविधं कोरकादि। यद्वाचस्पतिः। कीरकं मीतिकं स्वर्ण रततं चन्दनानि च।

शङ्खर्यम् च वस्त्रं चेत्पष्टी रतस्य जातयः ॥

– माणिक्यमिष ।

Str. 1064, 87. Calc. Ausg. und D. पदारागे। — Die Scholien: शाणारतमपि।

Str. 1066, 91. Die Scholien: वैरारो रिप। — 93. Calc. Ausg. रहाड़ी st. रहाड्डी, die Scholien wie wir.

Str. 1067, 94. Calc. Ausg. und D. दृद्धनापम:, die Scholien wie wir. Str. 1068, 96. Die Scholien: यद्वाचस्पति: ।

स्पिरिकास्तु त्रयस्तेषामाकाशस्पिरिका वरः । द्वी चीर्तेलस्पिरिकावाकाशस्पिरिकस्य तु । द्वी भेदी सूर्यकालश्च चन्द्रकालश्च तत्र च ।

— 97. Die Scholien: क्स्तिमस्तकागुद्भवात्मापि । यदाक् । व्यक्तिमस्तकद्ती तु दंष्ट्रा प्रुनवराक्याः । विषय विषय मेथा भुतंगमा वेणुमत्स्या मात्रिकयोनयः ॥

Str. 1069, 98. Calc. Ausg. und D. दलं st. दकं, die Scholien wie wir. — 99. Calc. Ausg. शालिल 1 — 2. Die Scholien: भवनं st. भवनं 1